International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 06, No. 01(II), January - March, 2024, pp. 193-197

1857 की क्रान्ति में राजस्थान की भूमिका

डॉ. सुमित मेहता*

सार

1857 की क्रान्ति जिसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में जाना जाता है, भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ विद्रोह का वर्णन करती है, जिसमें सिपाहियों, किसानों और सामन्तों सहित विभिन्न समूह ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ विद्रोह करने के लिए एक साथ आये। ब्रिटिश सरकार की विस्तारवादी नीतियों और भारत के आर्थिक शोषण के फलस्वरूप भारत के लोगों में ब्रिटिश सरकार के प्रति असंतोष पनपा। विद्रोह से राजस्थान भी अछूता ना रहा। नसीराबाद से होता हुआ विद्रोह राजस्थान के अनेक स्थानों को प्रभावित करता हुआ दिल्ली की ओर बढ़ा। विद्रोह का प्रमुख कारण सैनिकों से एनफील्ड रायफल को प्रयोग करवाना था जिसकी कारतूस गाय और सूअर की चर्बी से बनी थी। जिसका उपयोग करने से सैनिकों ने मना कर दिया। दूसरी तरफ असंतुष्ट सामन्तों ने भी अपनी खोई हुई जमीन को पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया। कमजोर नेतृत्व, पारस्परिक एकता का अभाव, शासकों द्वारा अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादार बने रहना आदि अनेकों कारणों से क्रान्ति सफल ना हो सकी। किन्तु 1857 की क्रान्ति से राजस्थान में राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता के प्रति जागरूकता को बढ़ावा मिला।

शब्दकोशः *विद्रोह, साम्राज्यवादी, पॉलिटिकल एजेन्ट, रेजीडेन्सी, लीजन, बैरक, ठाकुर, रियासत, सामन्त।*

प्रस्तावना

अंग्रेजों के भारत आने का मुख्य उद्येश्य केवल भारत का आर्थिक शोषण करना था। वे भारत से अधिक से अधिक धन एकत्रित कर अपने देश में ले जाना चाहते थे। भारत में गरीबी और बेकारी बढ़ने लगी थी तथा अंग्रेज सरकार की साम्राज्यवादी नीति के कारण भारतीयों में असन्तोष और विरोध की भावना और भी प्रबल हो उठी थी। मुगल सम्राट के साथ भी दुर्व्यवहार किया जा रहा था। लॉर्ड केनिंग ने यह घोषणा कर दी थी कि बहादुरशाह की मृत्यु के पश्चात् मुगल सम्राट को लाल किले को छोड़ किसी अन्य स्थान पर रहना होगा।(1) इसके अलावा अंग्रेज सरकार भारत में ईसाई धर्म का प्रसार करना चाहती थी। जिसके कारण भी भारतीयों के मन में आक्रोश फैला।

सेना में भी भारतीय सैनिकों और ब्रिटिश सैनिकों के बीच में भेदभावपूर्ण व्यवहार होता था। सन् 1857 से भारतीय सेना में अंग्रेजों ने एनफील्ड रायफल का उपयोग करना शुरू किया। जिसकी कारतूस पर लगा कागज गाय और सुअर की चर्बी से बना होता था। इस कारतूस को उपयोग में लाने से पूर्व इस पर लगे कागज को अपने मुँह से हटाना पड़ता था। इससे सैनिको का यह लगने लगा था कि अंग्रेज सरकार भारतीय सैनिकों का धोखे से धर्म भ्रष्ट करना चाहती है एवं उन्हें ईसाई बनाना चाहती है। इससे सैनिकों एवं आम जनता दोनों में ही विद्रोह भड़क उठा। इसके विरोध में बैरकपुर छावनी में दिनांक 29 मार्च को मंगल पांडे नामक सिपाही ने

* सहायक आचार्य, राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर, राजस्थान।

अंग्रेज अधिकारियों पर गोली चला दी। 3 मई को लखनऊ में भी सैनिकों ने इन कारतूसों का उपयोग करने से मना कर दिया। 10 मई को मेरठ में भी भारतीय सैनिकों ने अंग्रेज अधिकारियों पर गोली चला दी और छावनी में लूटपाट कर वे दिल्ली की और निकल गये। सम्पूर्ण उत्तरी भारत के साथ–साथ राजस्थान में भी विद्रोह की ज्वाला चारो ओर फैल गई।[2]

राजस्थान की भूमिका

देशी राज्यों पर नियन्त्रण रखने के लिए अंग्रेज सरकार द्वारा जगह जगह पर पॉलिटिकल एजेन्ट नियुक्त किए गये थे। ये सभी पॉलिटिकल एजेन्ट राजपूताना राज्य के सर्वोच्च अधिकारी एजेन्ट टू गवर्नर जनरल (एजीजी) के अधीन रहकर कार्य करते थे। एजीजी का कार्यालय अजमेर में था। जार्ज पैट्रिक लॉरेन्स उस समय एजीजी था तथा जयपुर में कर्नल ईडन, जोधपुर में मॉक मेसन, उदयपुर में शॉवर्स और कोटा में बर्टन पॉलिटिकल एजेन्ट के पदों पर नियुक्त थे। 1857 में राजस्थान में 6 ब्रिटिश छावनियाँ थी और सबसे शक्तिशाली छावनी नसीराबाद थी। इसके अतिरिक्त अन्य छावनियाँ नीमच, देवली, ऐरनपुरा, ब्यावर और खैरवाड़ा थी। इन सभी छावनियों पर सैनिक टुकडियाँ तैनात थी। इनमें कोई भी यूरोपीय सैनिक नहीं था, सभी भारतीय सैनिक थे। राजस्थान के किसी भी भाग में अभी तक रेल लाईन नहीं बिछाई गई थी। 19 मई को लॉरेन्स को मेरठ में हुए विद्रोह की सूचना प्राप्त हुई। उसने एक घोषणा पत्र तैयार कर राजपूतानें के सभी नरेशों को भिजवाया जिसमें अपने क्षेत्र में किसी भी विद्रोही को प्रविष्ट न होने देने एवं नरेशों को सरकार के प्रति निष्ठावान रहने को कहा गया। साथ ही यह भी कहा गया कि आवश्यकता पड़ने पर सहायता हेतु वे अपनी सेवाऐं ब्रिटिश सरकार को दे।[3]

अजमेर ब्रिटिश सरकार के लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण था। क्योंकि यहां ब्रिटिश सरकार का खजाना एवं गोला बारूद रखा हुआ था। सरकार नहीं चाहती थी कि अजमेर पर विरोधिओं का अधिकार हो। क्योंकि इससे विरोधियों की स्थिति और मजबूत हो जाती एवं ब्रिटिश सरकार को बहुत क्षति का सामना करना पड़ता।[4] अतः ए.जी.जी. लॉरेन्स ने सर्वप्रथम अजमेर की सुरक्षा को प्राथमिकता दी। अजमेर में 15 नेटिव इन्फेन्ट्री की दो टुकड़ियाँ तैनात थी, जिन्हें विश्वास योग्य नहीं माना गया क्योंकि ये कुछ समय पहले ही मेरठ से यहाँ आई थी और इन सैनिकों में भी ब्रिटिश विरोधी भावना जन्म ले चुकी थी। अतः डीसा से यूरोपियन सैनिक अजमेर बुलवाए गए।[5] साथ ही कमिश्नर डिक्शन ने ब्यावर से मेर रेजीमेन्ट के सैनिकों को अजमेर बुला लिया। मेर रेजमेन्ट के सैनिक अधिक विश्वसनीय थे और इन पर गाय और सुअर की चर्बी वाले कारतूसों के उपयोग और धर्म परिवर्तन जैसी बातों का कोई प्रभाव नहीं था। 15 नेटिव इन्फेन्ट्री के सैनिकों को नसीराबाद भेज दिया गया। कोटा कन्टिन्जेन्ट के सैनिकों को भी अजमेर पँहुचनें के आदेश दे दिए गये।[6] मॉक मेसन के आदेश मिलने के बाद जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह ने भी कुशलराज सिंघवी के नेतृत्व में अश्वारोही सेना अजमेर भेजी।[7]

ऐसे अनेकों कारण थे जिनसे राजस्थान के सैनिकों और आम नागरिकों के मन में क्रान्ति की ज्वाला भड़क उठी। मेरठ से आए सैनिकों की निष्ठा के प्रति ब्रिटिश सैनिकों को सन्देह था। उन्हें डर था कि ये सैनिक कहीं विद्रोह ना कर दे। अतः ब्रिटिश सेना ने पहले से ही इस विद्रोह को दबाने के लिए तोपों में गोला बारूद भर कर तैयार करवा लिया था। यह देखकर सैनिकों में विद्रोह की भावना और भड़क उठी। अजमेर से नेटिव इन्फेन्ट्री को हटाकर मेर रेजीमेन्ट नियुक्त करने के कारण भी सैनिकों में रोष था। इसके अतिरिक्त यह भी अफवाह फैल रही थी कि ब्रिटिश सरकार द्वारा हिन्दू सैनिकों को धोखे से ईसाई बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। इसके लिए उन्हें हड्डियों का चूर्ण मिला आटा और चर्बी वाली कारतूस दी जा रही है। इसके अलावा डीसा से ब्रिटिश सेना आने के कारण सैनिकों को पूर्ण विश्वास हो गया कि कम्पनी उन्हें कुचलने की तैयारी कर रही है। अतः 28 मई 1857 को भारतीय सैनिकों ने खुले रूप से विद्रोह कर दिया। सैनिकों ने छावनी को लूट कर अंग्रेजी अफसरों के निवास स्थानों पर आक्रमण कर दिये। अंग्रेज अधिकारियों को अपने परिवार सहित ब्यावर की तरफ भागना पड़ा। छावनी से खजाना और हथियार लूट कर सभी विप्लवकारी दिल्ली की ओर कूच कर गये।[8] 18 जून 1857 को सभी विप्लवकारी दिल्ली पंहुचें। दिल्ली में अंग्रेजी सेना पर आक्रमण कर उसे परास्त कर दिया।

नसीराबाद के बाद नीमच छावनी में भी विद्रोह की ज्वाला भड़की। नसीराबाद में हुए सैनिक विद्रोह से डरकर नीमच में कमाण्डर कर्नल एबॉट ने भारतीय सैनिक पदाधिकारियों को ब्रिटिश सरकार के प्रति निष्ठावान बने रहने की शपथ दिलवाई। साथ ही स्वयं भी भारतीय सैनिकों पर पूर्ण विश्वास रखने की शपथ ली। 2 जून 1857 को सभी सैनिकों को उसने मैदान पर एकत्रित कर सरकार के प्रति वफादारी की शपथ लेने को कहा। किन्तु मोहम्मद अली बेग नामक एक सैनिक ने सरकार की वफादारी पर यह कहते हुए प्रश्न उठाया कि उन्होनें अवध पर अधिकार क्यों किया। अतः भारतीय सैनिक भी उनके प्रति वफादार नहीं रहेगें। 3 जून 1857 को जब नीमच में नसीराबाद की क्रान्ति की सूचना मिली तो यहां के सैनिकों ने भी विद्रोह कर दिया। सैनिकों ने अंग्रेज अधिकारी सार्जेन्ट की हत्या कर छावनी को लूट लिया। बचे हुए ब्रिटिश अधिकारी अपने परिवार सहित वहां से भाग निकले। सैनिकों ने सभी .कैदियों को मुक्त करा वहां के खजाने को लूट कर छावनी में आग लगा दी। इसके बाद उन्होनें दिल्ली की और कूच किया।[(9)] नीमच से भागे हुए अंग्रेज अधिकारियों और उनके परिवारों को डूँगला गाँव में रूगाराम नामक एक किसान ने शरण दी। यहां से पॉलिटिकल एजेन्ट शावर्स ने इन्हें उदयपुर पंहुचा दिया। उदयपुर के महाराणा ने इन्हें जगमन्दिर में ठहराया और इनकी सुरक्षा का प्रबन्ध किया।[(10)] नीमच से क्रान्तिकारी निम्बाहेड़ा पंहुचे और वहां से देवली पंहुचे। देवली में तैनात महीदपुर की सैनिक टुकडी भी क्रान्तिकारियों के साथ मिल गई। इन्होनें देवली छावनी को लूटा और टोंक रवाना हो गए। टोंक के नवाब की सेना के कुछ सैनिक भी इनके साथ मिल गए। यहां से सैनिक आगरा की ओर रवाना हुए। रास्ते में कोटा कन्टिन्जेन्ट के कुछ सैनिक भी इनसे आकर मिल गए। इस तरह सभी सैनिक दिल्ली में मौजूद क्रान्तिकारियों से जा मिले। केप्टन शावर्स ने 6 जून 1857 को कोटा, बून्दी और मेवाड़ सेनाओं की मदद से नीमच पर पुनः अधिकार कर लिया। हाडौती के पॉलिटिकल एजेन्ट बर्टन ने कोटा, बून्दी और झालावाड़ सेनाओं को सम्पूर्ण नीमच जिलें में तैनात कर ब्रिटिश सरकार की स्थिति पुनः सुदृढ़ कर ली।

शावर्स ने ए.जी.जी लॉरेन्स को नीमच की विद्रोहियों पर आक्रमण करने का प्रस्ताव दिया किन्तु लॉरेन्स ने अजमेर की सुरक्षा को अधिक महत्व देते हुए इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। उसने अजमेर के किले की मरम्मत करवाई और 6 महिनों के लिए खाद्य सामग्री एकत्रित कर ली। हरमेजस्टीज इन्फेन्ट्री और बम्बई इन्फेन्ट्री भी अजमेर पंहुच गई जिससे वहां की स्थिति और भी मजबूत हो गई। लॉरेन्स ने अजमेर में रहते हुए ही सभी पॉलिटिकल एजेन्टों से सम्पर्क बनाए रखा। उसका मुख्य लक्ष्य अजमेर के खजाने और वहां रखे गोला–बारूद की रक्षा करना था।

मारवाड़ के सामन्त अपने महाराजा तख्तसिंह के निरंकुश व्यवहार के कारण उससे विद्रोह की तैयारी कर रहे थे। ब्रिटिश सरकार सामन्तों के अधिकारों को समाप्त करने का प्रयत्न कर रही थी। अतः सामन्त वर्ग में ब्रिटिश सरकार के प्रति विद्रोह भड़क उठा था। 1857 में आऊवा के ठाकुर कुशालसिंह ने बिथोरा के एक जागीरदार की हत्या करवा दी। इससे नाराज होकर महाराजा तख्तसिंह ने कुशालसिंह के विरूद्ध सेना भेजी जो कुशालसिंह से परास्त हो गई। मारवाड़ के सभी ठाकुर कुशालसिंह के साथ हो गये। इस समय अन्य राजाओं की भांति ही महाराजा तख्तसिंह ने भी अपनी सेना की एक टुकड़ी ब्रिटिश सरकार की सहायता हेतु भेजी हुई थी। अश्वारोही सेना अजमेर में गोला–बारूद एवं सरकारी खजाने की रक्षा हेतु भेजी हुई थी। अतः इस समय कुशाल सिंह के विरूद्ध कोई भी कार्यवाही करना सम्भव नहीं था।[(11)] 18 अगस्त को रीवा के ठाकुर के विद्रोह को दबाने के लिए अनादरा नामक स्थान पर जोधपुर लीजन की एक सैनिक टुकडी नियुक्त की गई। किन्तु इस सैनिक टुकड़ी ने 21 अगस्त को विद्रोह कर दिया। इन सैनिकों ने माउन्ट आबू पंहुच कर यूरोपियन सैनिकों के बैरकों पर हमला कर दिया। यूरोपियन सैनिकों के जवाबी हमले के कारण इन्हें यहां से भागना पड़ा। विद्रोही सैनिक ऐरनपुरा पंहुचे जहां पहले से ही विद्रोह का शंखनाद हो चुका था। यहां से सभी सैनिक दिल्ली की ओर प्रस्थान कर गये। रास्ते में सैनिकों को सूचना मिली कि जोधपुर की एक सैनिक टुकड़ी को ओनाढ़ सिंह के नेतृत्व में इन्हें रोकने हेतु पाली में तैनात किया गया है। अतः विद्रोही सैनिक अपना रास्ता बदलते हुए आऊवा के पास पंहुचे। आऊवा में ठाकुर कुशालसिंह ने इन्हें अपनी सेना में शामिल कर लिया। साथ ही आलनियावास के

ठाकुर अजीतसिंह, आसोप के ठाकुर शिवनाथसिंह, गूलर के ठाकुर विशनसिंह सभी अपनी सेनाओं सहित आऊवा पंहुच गये। इस तरह आऊवा ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध एक सुदृढ़ गढ़ बन गया।

ओनाढ़सिंह की सहायता हेतु महाराजा तख्तसिंह ने विजयमल मेहता, राजमल मेहता, कुशलराज सिंघवी आदि के नेतृत्व में एक ओर सेना भेजी। 8 सितम्बर 1857 को आऊवा से तीन मील दूर बिथोरा गाँव में ओनाढ़सिंह और ठाकुर कुशालसिंह की सेना के मध्य युद्ध हुआ जिसमें ओनाढ़सिंह की पराजय हुई। ओनाढ़सिंह मारा गया और युद्ध की कुछ सामग्री और तोपें विद्रोही सैनिकों ने लूट ली।(12)

आऊवा में हुई हार से चिंतित होकर ए.जी.जी जॉर्ज लॉरेंस स्वयं अजमेर से सेना एकत्रित कर आऊवा पर आक्रमण करने के लिए रवाना हुआ। इसकी सूचना उसने जोधपुर में पॉलिटिकल एजेन्ट मॉक मेसन को भी दी। मॉक मेसन भी अपनी सेना सहित आऊवा के लिए रवाना हो गया। 18 सितम्बर को लॉरेन्स की सेना और विद्रोहियों के बीच गोलाबारी हुई। विद्रोहियों की सेना ने आऊवा के गढ़ में मोर्चा बांध लिया और वहां से लड़ती रही। विद्रोहियों ने मॉक मेसन को मार कर आऊवा के गढ़ के सामने वृक्ष पर लटका दिया।(13) जॉर्ज लॉरेन्स को भागना पड़ा। आऊवा के ठाकुर ने मॉक मेसन की अन्त्येष्टि की व्यवस्था करवाई। ए.जी.जी की पराजय से सभी विद्रोही सैनिकों का मनोबल बढ़ गया था। दिल्ली के क्रान्तिकारियों ने आऊवा के सभी सैनिकों को दिल्ली आने को कहा।

भरतपुर भी विद्रोह की ज्वाला से बच नहीं सका। मथुरा में भी विद्रोह भड़का। भरतपुर राज्य की सैनिक टुकड़ी, जो कि हुडल में तैनात थी, ने 31 मई 1857 को विद्रोह कर दिया। भरतपुर के सरदारों ने वहां के पॉलिटिकल एजेन्ट मेजर मॉरीशन को भरतपुर छोड़कर चले जाने के लिए कहा। भरतपुर की सेना में अधिकांश मुसलमान थे अतः उन्हें डर था कि वे किसी भी समय रेजीडेन्सी पर आक्रमण कर सकते हैं। मेजर मारीशन अपना कार्यभार गुलाबसिंह को सौंपकर भरतपुर से आगरा चला गया। भरतपुर की सेना में विद्रोह की प्रबल भावना थी। भरतपुर और अलवर के मेवाती और गुर्जर लोगों ने भी खुलकर विद्रोह का प्रदर्शन किया। वहां की जनता ने पूर्ण रूप से विद्रोहियों का साथ दिया।

उधर धौलपुर रियासत भी कोई शान्त नहीं थी। यहां के गुर्जर नेता देवा ने भी विद्रोह का झण्डा खड़ा कर दिया और 9 जुलाई 1857 को इरादत नगर से राज्य का खजाना लूट लिया। अक्टूबर, 1857 में इन्दौर और ग्वालियर के क्रान्तिकारियों ने धौलपुर में प्रवेश किया। यहां की सेना के अधिकांश अधिकारी और सैनिक भी इन क्रान्तिकारियों के साथ मिल गये। सबने धौलपुर नरेश भगवतसिंह को बन्दी बना लिया और उससे अपनी मांगे मनवाकर राव रामचन्द्र और हीरालाल के नेतृत्व में राज्य की तोपें लेकर आगरा की तरफ निकल गये। दिसम्बर 1857 तक धौलपुर शासक क्रान्तिकारियों के अधीन ही रहा। अन्त में पटियाला नरेश ने 2000 सिक्ख सैनिक तोपों सहित धौलपुर भेजे और धौलपुर नरेश को क्रान्तिकारियों से आजाद करवा राज्य में पुनः व्यवस्था स्थापित की। क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार कर उन्हे सजा दी गई।(14)

निष्कर्ष

1857 में हुआ विद्रोह यद्यपि लम्बे समय तक चला परन्तु अन्त में ब्रिटिश सरकार उसे कुचलने में सफल रही। राजस्थान में भी क्रान्ति सफल ना हो का प्रमुख कारण राजस्थान के शासकों का ब्रिटिश सरकार को पूर्ण समर्थन देना रहा। बून्दी के महाराव रामसिंह को छोड़कर अन्य सभी शासकों ने क्रान्ति को दबाने में ब्रिटिश सरकार का साथ दिया। बून्दी का शासक भी अंग्रेज सरकार के पक्ष में था किन्तु कोटा राव के साथ उसके संबंध अच्छे ना होने के कारण उसने कोटा के क्रान्तिकारियों को कुचलने के लिए सैनिक नहीं भेजे। मेवाड़ और मारवाड़ राज्यों के सामन्तों ने अपने शासकों का विरोध करना शुरू कर दिया था। जिसे ब्रिटिश सरकार के सहयोग से ही दबाया जा सकता था। अतः मेवाड़ और मारवाड़ के शासकों ने अपने स्वार्थों की पूर्ति हेतु ब्रिटिश सरकार के पक्ष में अपनी सेनाऐं भेजी। बीकानेर का महाराजा सरदार सिंह ने तो स्वयं ही विद्रोहियों का दमन करने हेतु अपनी सेना का संचालन किया। जयपुर के नरेश सवाई रामसिंह और जैसलमेर के महारावल ने भी ब्रिटिश सरकार के प्रति पूर्ण निष्ठा प्रदर्शित की थी।

राजस्थान के अनेक छोटे–बड़े राज्यों में बंटे होने के कारण और पारस्परिक एकता के अभाव के कारण 1857 की क्रान्ति को एक योग्य नेतृत्व नहीं मिल सका। सभी शासक अपने स्वार्थों की पूर्ति के कारण ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादार बने रहे। सामन्तों ने ब्रिटिश सरकार का खुलकर विरोध किया था। किन्तु वे भी अपने स्वार्थों के अधीन थे और अपने अधिकारों को खोना नहीं चाहते थे। इनमें कूटनीति का अभाव और सही निर्णय ना लेने की क्षमता का अभाव होने के कारण क्रान्ति नेतृत्वहीन ही बनी रही। मुगल बादशाह बहादुरशाह का नेतृत्व कमजोर और अदूरदर्शी था जिसके कारण ब्रिटिश सरकार का दिल्ली पर पुनः अधिकार हो गया। ब्रिटिश सेना ने राजस्थान के क्रान्तिकारियों को नारनौल में पराजित कर दिया। जिससे ब्रिटिश विरोधी सामन्त वर्ग भी हतोत्साहित हो गया। इसके बाद कभी भी एकता ना हो सकी। तात्यां टोपे ने राजस्थान से ब्रिटिश विरोधी सहयोग की अपेक्षा रखी किन्तु तब तक राजस्थान में सभी जगहों पर विद्रोहों को ब्रिटिश सरकार द्वारा कुचल दिया गया था।

अपने गौरवपूर्ण इतिहास के बावजूद भी सक्षम नेतृत्व के अभाव में राजस्थान दुर्भाग्यशाली रहा कि क्रान्तिकारियों की ब्रिटिश विरोधी भावनाऐं मूर्त रूप ना ले सकी। फिर भी इस देशव्यापी अभियान में राजस्थान का योगदान महत्वपूर्ण रहा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आधुनिक भारत का इतिहास, जय प्रकाश मिश्र, पृ. 387
2. एफटी फिफ्टी, सुरेन्द्रनाथ सेन, पृ. 49, 55
3. टी. आर. होम्स, ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ. 148
4. टी. आर. होम्स, ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ. 150
5. एफटी फिफ्टी, सुरेन्द्रनाथ सेन, पृ. 309
6. जी. एच. ट्रेवोर, चैप्टर ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, पृ. 3
7. द ईस्ट इण्डिया कम्पनी एंड मारवाड़, जबरसिंह, पृ. 113
8. खड्गावत, राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल ऑफ 1857, पृ. 18
9. खड्गावत, राजस्थान्स रोल इन द स्ट्रगल ऑफ 1857, पृ. 20–21
10. राजस्थान का स्वाधीनता संग्राम, प्रकाश व्यास, पृ. 81–82
11. रोल ऑफ नोबिलिटी इन मारवाड़, आर.पी. व्यास, पृ. 134
12. मारवाड़ प्रेसी, पृ. 169
13. हकीकत बही नम्बर 18, पृ. 387, 409
14. राजस्थान का स्वाधीनता संग्राम, प्रकाश व्यास, पृ. 178–79

❖◆❖